बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

(पशुपालन प्रभाग)

पशुओं (पाड़ी/बाछी) मे ब्रुसेलोसिस रोग नियंत्रण कार्यक्रम 2018

रोग का परिचय

यह रोग ब्रुसेला नामक जीवाणु से होता है। पशुओं में इस रोग से मुख्यतः गाय, भैंस, बकरी, भेंड़, सूकर इत्यादि आक्रान्त होते हैं। यह रोग पशुओं से मनुष्यों में भी फैलता है। मनुष्यों में इसे लहरिया ज्वर **(Undulant Fever)** कहते हैं। अनुमानतः विश्व में प्रतिवर्ष 05 लाख व्यक्ति इस बीमारी से प्रभावित होते हैं। यह बीमारी कुछ देशों को छोड़कर सभी देशों में पाई जाती है। आक्रान्त पशुओं में दूध उत्पादन में कमी, बाँझपन, गर्भपात इत्यादि के कारण भारतवर्ष में इससे अनुमानतः प्रतिवर्ष लगभग 350 मिलियन रूपये की आर्थिक क्षति होती है।

रोग का प्रसार

- स्वस्थ मादा पशुओं का संक्रमित नर पशुओं से प्राकृतिक गर्भाधान कराने से।
- संक्रमित पशुओं से गर्भपात के बाद निकले जेर, भ्रूण द्रव्य, योनि स्राव, मूत्र, गोबर इत्यादि के सम्पर्क में स्वस्थ पशुओं के आने से।
- पशु के दूध को बिना खौलाये या बिना पाश्च्युरीकृत किये सेवन से एवं अधपके माँस के सेवन से।
- संक्रमित पशु के तरल या हिमकृत सीमेन द्वारा कृत्रिम गर्भाधान कराने से।
- आवारा कुत्ते, बिल्ली, चमोकन, खटमल एवं मक्खियों जैसे वाहकों से।
- इसका संक्रमण कटी-फटी त्वचा एवं ऑख के कंजंक्टाइवा के माध्यम से।

रोग के लक्षण

- मादा पशुओं में रोग के लक्षणः-
  - इस रोग से प्रभावित मादा पशुओं में गर्भावस्था के प्रायः अंतिम तीन माह में गर्भपात। समय से पहले बच्चा होना। गर्भकाल पूरा होने पर मृत बच्चा पैदा होना।
  - कुछ संक्रमित पशुओं से समय पर पैदा होनेवाले बच्चे की लगभग एक सप्ताह के अंदर ही मृत्यु।
  - गर्भाशय में सूजन (शोथ)। प्रसव के बाद जेर के रूकने की अधिक संभावना।
  - पशु के दूध उत्पादन क्षमता में कमी।
  - पहले गर्भपात के बाद दूसरी बार गर्भधारण प्रायः सामान्य। परन्तु पशुओं के दूध एवं पेशाब में जीवाणु का निकलना जारी, जिससे बीमारी का संक्रमण।
  - पशु में बाँझपन। बाँझ पशु इस रोग के जीवाणु के वाहक।
- नर पशु में लक्षण :- अंडकोषों में सूजन। पशु के प्रजनन क्षमता में कमी। ऐसे पशु इस रोग के जीवाणु के वाहक।
- घोड़ों मे लक्षण :- गर्दन पर जख्म **(Fistulous wither)**
- मनुष्यों में लक्षण - मनुष्यों में मुख्य लक्षण तीव्र इन्फ्लूएंजा के समान। ज्वर घटता-बढ़ता है, लहरिया ज्वर **(Undulant Fever)** कहते है। तीव्र ज्वर, अत्यधिक पसीना आना, सिर दर्द, जोड़ों एवं मांसपेशियों में दर्द, भूख की कमी इत्यादि लक्षण प्रमुख हैं।
- कुछ पशुओ में घुटनों में सूजन **(Hygroma)**
- ऊँट, भैंस, भेंड़, बकरी, सूकर एवं अन्य जुगाली करने वाले पशुओं में भी लक्षण उपर्युक्त वर्णित लक्षणों के समान ही।

उपचार

कोई कारगर उपचार नही। गर्भपात के बाद पशु चिकित्सक के परामर्शानुसार गर्भाशय की एंटीसेप्टिक धुलाई एवं एंटीबायोटिक दवा द्वारा उपचार।

बचाव

- रोगग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना। नये पशुओं को झुण्ड में शामिल करने से पूर्व ब्रुसेलोसिस रोग के विरूद्ध जाँच करा लेना। ब्रुसेलोसिस स्क्रीनिंग जाँच द्वारा सकारात्मक पाये गये पशुओं को स्वस्थ पशुओ से अलग कर देना।
- रोगी पशु के बाड़े को स्प्रेईंग द्वारा कीटाणुरहित कर देना।
- संक्रमित लिटर, बेडिंग एवं अन्य संक्रमित सामानों को जला देना।
- मृत पशु या गर्भपात के बाद निकले सभी द्रव्यों को जला देना या चूना के साथ भूमि में गहराई में गाड़ देना।
- पशु के सम्पर्क में आने से पूर्व एवं बाद में अपने हाथ को एंटीसेप्टिक से साफ कर लेना।

टीकाकरण

कारगर उपचार के अभाव में टीकाकरण ही एकमात्र विकल्प। हर्ड (झुण्ड) के 4-8 माह के उम्र वाले बाछियों एवं पाड़ियों का ब्रुसेला एबोर्टस (स्ट्रेन-19) का टीका दिलवाना। यह टीका पशु के जीवन काल में एक ही बार दिया जाता है।बिहार में ब्रुसेलोसिस सी0 पी0 कार्यक्रम के अंतर्गत टीकाकरण कार्य दिनांक- 20.01.2018 से 03.02.2018 तक चलाया जा रहा है।

कार्यक्रम की विशेष जानकारी निकटवर्ती पशु चिकित्सालय/ सबंधित जिला पशुपालन कार्यालय अथवा पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना (दूरभाष संख्या 0612-2226049) से प्राप्त की जा सकती है।

पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार पटना द्वारा जनहित में प्रचारित